© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 04 , Issue : 05 | May 2018

उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी स्तर के सरकारी तथा निजी विद्यालयों में कार्यरत पुरूष तथा महिला शिक्षकों की जीवन संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।

डा इन्दिरा सिंह, वरिष्ठ आचार्या, किशन इन्सटीट्यूट ऑफ टीचर्स, एजूकेशन, मेरठ।

सारांश

शिक्षा एक दीर्घगामी चलने वाली प्रक्रिया हैं तथा शिक्षक इस प्रक्रिया में वह चालक है जो छात्र को उसके गंतव्य स्थल तक पहुँचाता है। लेकिन वर्तमान में शिक्षण का स्तर दिन–प्रतिदिन गिरता जा रहा है और इसके लिए पूर्णरूपेण शिक्षक को जिम्मेदार ठहराया जाता है। संभवतः ऐसा इसलिए होता है कि शिक्षक अपने कार्य से संतुष्ट न हो, कार्य से संतुष्ट हो तो जीवन से संतुष्ट न हो। यदि शिक्षक जीवन से संतुष्ट नही है तो इसका सीधा प्रभाव उसकी कार्यप्रणाली पर पड़ता है। इसलिये शोधकर्त्री ने सरकारी तथा निजी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरूष तथा महिला शिक्षकों की जीवन–संतष्टि को जानने का प्रयास किया। तद्हेतु कुल 160 शिक्षकों (80 सरकारी विद्यालय के शिक्षक–40 पुरूष शिक्षक, 40 महिला शिक्षक, 80 निजी विद्यालय के शिक्षक–40 पुरूष शिक्षक, 40 महिला शिक्षक) का चयन न्यादर्श हेतु किया। शिक्षकों की जीवन–संतुष्टि के स्तर को मानकीकृत परीक्षण द्वारा ज्ञात किया गया तथा तुलनात्मक अध्ययन में मध्यमान, मानक विचलन तथा 'टी' परीक्षण का प्रयोग किया गया। संकलित ऑकड़ों के विश्लेषण से सरकारी तथा निजी विद्यालयों में कार्यरत पुरूष तथा महिला शिक्षकों की जीवन संतुष्टि में सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ।

Key words- माध्यमिक, सरकारी तथा निजी, पुरूष तथा महिला, शिक्षक, जीवन–संतुष्टि।

(1) भूमिका– मानव जीवन में शिक्षा की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। जन्म के समय के बालक के पशुवत् आचरण को मानवीय आचरण में परिवर्तित करने का कार्य शिक्षा ही करती है। शिक्षा ही वह माध्यम है जो व्यक्ति के व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन लाती है। यह सकारात्मक परिवर्तन योग्य शिक्षकों द्वारा ही लाया जा सकता है। परन्तु आज समस्या यह है कि शिक्षक ने अपना गौरवशाली व्यक्तित्व खो दिया है। लेकिन इस स्थिति के लिए सिर्फ शिक्षक को ही जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता। अपने कार्य से असंतुष्ट शिक्षक कहीं न कहीं अपने जीवन से भी असंतुष्ट होगा और इसका सीधा प्रभाव शिक्षक की कार्य प्रणाली पर पड़ेगा। एक असंतुष्ट शिक्षक से छात्रों के मूल्यों, रूचियों, अभिवृत्तियों, आदतों एवं वैयक्तिक समंजनशीलता के सृजन एवं विकास की अपेक्षा नहीं की जा सकती । वर्तमान समय में अधिकांशतः यह देखने में आ रहा है कि शिक्षकों में अपने जीवन व कार्य के प्रति संतुष्टि का अभाव है। अतः ऐसे में शोधकर्ता ने यह अनुभव किया कि आज शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर शिक्षकों की जीवन–संतुष्टि का अध्ययन करने की आवश्यकता है। इसी को ध्यान में रखते हुए शोधकर्त्री ने उक्त विषय को शोध का आधार बनाया।

रेड्डी व बाबू (1995) के अध्ययन में सरकारी शिक्षक, गैर सरकारी शिक्षकों की अपेक्षा अधिक संतुष्ट पाए। तोमर (2001) ने अपने अध्ययन में महिला प्रवक्ता को पुरूषों की अपेक्षा अधिक संतुष्ट तथा सरकारी शिक्षक को गैर सरकारी की अपेक्षा अधिक संतुष्ट पाया। सिंह (2010) ने सरस्वती शिशु मन्दिर व सरकारी प्राथमिक विद्यालय

के शिक्षकों की संतुष्टि में सार्थक अन्तर प्राप्त किया। अली (2012) ने अपने अध्ययन में मदरसे के शिक्षकों की कार्य–संतुष्टि औसत तथा सरस्वती शिशु मन्दिर के शिक्षकों की कार्य–संतुष्टि उच्चतम स्तर की पायी गयी। द्विवेदी (2013) ने प्राथमिक शिक्षकों की कार्य–संतुष्टि व मानसिक स्वास्थ्य में धनात्मक सम्बन्ध पाया। जाखड़ (2015) ने पंजाब के शिक्षकों की कार्य–संतुष्टि का अध्ययन कर यह पाया कि अनुसूचित जाति के शिक्षकों की कार्य–संतुष्टि सामान्य शिक्षकों की अपेक्षा अधिक थी।

(2) **अध्ययन के उद्देश्य–**

(1) उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी तथा निजी विद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षकों की जीवन–संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।

(2) उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी तथा निजी विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की जीवन–संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।

(3) उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों में कार्यरत पुरूष तथा महिला शिक्षकों की जीवन–संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।

(4) उच्च माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालयों में कार्यरत पुरूष तथा महिला शिक्षकों की जीवन–संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।

(3) **शोध परिकल्पना–**

(1) उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी तथा निजी विद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षकों की जीवन–संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं है।

(2) उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी तथा निजी विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की जीवन–संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं है।

(3) उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों में कार्यरत पुरूष तथा महिला शिक्षकों की जीवन–संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं है।

(4) उच्च माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालयों में कार्यरत पुरूष तथा महिला शिक्षकों की जीवन–संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं है।

(4) **प्रतिदर्श–** प्रस्तुत शोध में मेरठ जनपद के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में से सरकारी विद्यालयों से 80 (40 पुरूष शिक्षक, 40 महिला शिक्षक) तथा निजी विद्यालयों से 80 (40 पुरूष शिक्षक, 40 महिला शिक्षक कुल 160 शिक्षकों का चयन सम्भाव्यता पर आधारित 'यादि्दच्छिकी न्यादर्श चयन' विधि द्वारा किया गया। शोघकर्त्री द्वारा चयनित न्यादर्श का वितरण सरणी–1 में प्रस्तुत है–

सारणी–1

प्रदत्त संकलन हेतु चयनित शिक्षकों का विरण

क्र. सं	समूह का प्रकार	लिंग		योग
		पुरूष	महिला	
1.	सरकारी स्कूल के शिक्षक	40	**40**	**80**
2.	निजी स्कूल के शिक्षक	40	**40**	**80**
	योग	80	**80**	**160**

(5) **शोध उपकरण**– शोध समस्या से सम्बन्धित उद्देश्यों तथा परिकल्पनाओं के निर्धारण के उपरान्त उपयोगी व उचित आँकड़ों के संकलन की आवश्यकता होती है। शोध हेतु चयनित उपकरण उद्देश्यों के अनुरूप, विश्वसनीय, वैद्य तथा वस्तुनिष्ठ होना चाहिए। शोधकर्त्री ने समस्या के विशिष्ट स्वरूप को दृष्टिगत रखते हुए डा० क्यू० आलम व रामजी श्रीवास्तव द्वारा निर्मित 'जीवन–संतुष्टि मापनी'(Life Satisfaction Scale) का प्रयोग किया। इसमें कुल 60 प्रश्न, कथन के रूप में है। जिनमें कथनों के उत्तर 'हाँ' व 'नहीं' में दिए गए हैं। हाँ के लिए +1 व नही के लिए –1 अंक निर्धारित हैं। इनमें से किसी एक पर सही (✓) का निशान लगाकर उत्तरदाता को अपना मत व्यक्त करना था।

(6) **प्रदत्त संग्रह**– प्रस्तुत शोध में प्रदत संकलन हेतु सर्वेक्षण की विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोंग किया गया।

(7) **फलांकन**– उक्त अभिवृति मापनी को सरकारी तथा निजी विद्यालयों के पुरूष तथा महिला अभिभावकों पर प्रशासित कर उनकी प्रति प्रतिक्रियाओं के आधार पर प्राप्तांक प्राप्त किए गए जिससे शिक्षकों की जीवन–संतुष्टि का आँकलल किया जा सकें।

(8) **प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ**– प्रदत्तों का विश्लेषण करने के लिए जिन सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया, वे इस प्रकार हैं।

(A) मध्यमान (B) मानक विचलन

(C) 'टी' परीक्षण

(D) सार्थकता स्तर–प्रस्तुत अध्ययन में परिक्लपनाओं का परीक्षण 0.05 एंव 0.01 स्तरों पर किया जाएगा।

(9) **प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या**– प्रयुक्त विधियों एंव प्रविधियों के अनुसार संकलित आँकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण एंव उसके परिणामों का आँकलन इस प्रकार है–

(1) प्रस्तुत अध्ययन का पहला उद्देश्य उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी तथा निजी विद्यालयों में कार्यरत पुरूष

शिक्षकों की जीवन–संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना प्रस्तावित था। माध्यमानों के मध्य प्राप्त अन्तर सार्थकता की जाँच (टी) परीक्षण द्वारा की गयी, जिसे सारणी–2 में दर्शाया गया हैं।

सारणी–2

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षकों की जीवन–संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

क्र0 स0	विद्यालय का प्रकार	प्रयोज्यों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मान	सार्थकता स्तर
1–	सरकारी विद्यालय के शिक्षक	40	52.5	2.85	10	सार्थक अन्तर
2–	निजी विद्यालय के शिक्षक	40	48.2	4.78		

अपेक्षित 'टी' मान–0.05 स्तर पर 1.96

0.01 स्तर पर 2.58

सारणी के अनुशीलन से यह स्पष्ट होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी तथा निजी विद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षकों की जीवन–संतुष्टि में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ।

(2) प्रस्तुत अध्ययन का दूसरा उद्देश्य उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी तथा निजी विद्यालयों में कार्यत महिला– शिक्षकों की जीवन–संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना प्रस्तावित था। मध्यमानों के मध्य प्राप्त अन्तर की सार्थकता की जाँज 't' परीक्षण द्वारा की गयी, जिसे सारणी–3 में दर्शाया गया हैं।

सारणी–3

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की जीवन–संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

क्र0 सं0	विद्यालय का प्रकार	प्रयोज्यों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	't' मान	सार्थक्ता स्तर
1.	सरकारी विद्यालय के शिक्षक	40	38.1	5.85	6.41	सार्थक अन्तर
2.	निजी विद्यालय के शिक्षक	40	26.05	9.92		

अपेक्षित 'टी' मान–0.05 स्तर पर 1.96

0.01 स्तर पर 2.58

सारणी के अनुशीलन से यह स्पष्ट होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी तथा निजी विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की जीवन–संतुष्टि में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर पाप्त हुआ।

(3) प्रस्तुत अध्ययन का तीसरा उद्देश्य उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों में कार्यरत पुरूष तथा महिला शिक्षकों की जीवन–संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना प्रस्तावित था। मध्यमानों के मध्य प्राप्त अन्तर की सार्थकता की जाँच 't' परीक्षण द्वारा की गयी, जिसे सारणी,–4 में दर्शाया गया हैं–

सारणी–4

उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों में कार्यरत पुरूष तथा महिला शिक्षकों की जीवन–संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

क्र0 सं0	विद्यालय का प्रकार	प्रयोज्यों की सं0	मध्यमान	मानक–विचलन	't' मान	सार्थकता स्तर
1–	सरकारी विद्यालय कें पुरूष शिक्षक	40	38.1	5.85	6.41	सार्थक अन्तर
2–	सरकारी विद्यालय के महिला शिक्षक	40	26.05	9.92		

अपेखित 'टी' मान –0.05 स्तर पर 1.96

– 0.01 स्तर पर 2.58

सारणी के अनुशीलन से यह स्पष्ट होता हैं कि उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों में कार्यरत पुरूष तथा महिला शिक्षकों में कार्यरत शिक्षकों की जीवन–संतुष्टि में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ।

(4) प्रस्तुत अध्ययन का चौथा उद्देश्य उच्च माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालयों में कार्यरत पुरूष तथा महिला शिक्षकों की जीवन–संतुष्टि का अध्ययन करना प्रस्तावित था। मध्यमानों के मध्य प्राप्त अन्तर की सार्थकता 't' परीक्षण द्वारा की गयी, जिसे सारणी–5 में दर्शाया गया हैं–

सारणी–5

उच्च माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एंव महिला शिक्षकों की जीवन–संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

क्र0 सं0	विद्यालय का प्रकार	प्रयोज्यों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	't' मान	सार्थकर्तास्तर
1	निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षक	40	50.1	5.4	3.50	सार्थक अन्तर
2	निजी विद्यालय के महिला शिक्षक	40	40.2	4.1		

अपेक्षित 'टी' मान– 0.05 स्तर पर 1.96

0.01 स्तर पर 2.58

सारणी के अनुशीलन से यह स्पष्ट होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों की जीवन संतुष्टि में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ।

समस्त सारणियों के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि चाहे सरकारी हो अथवा निजी, समस्त शिक्षकों (पुरूष एवं महिला) की जीवन संतुष्टि में सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ। इसका कारण संभवतः विद्यालयों की प्रकृति (सरकारी तथा निजी) तथा लिंग भेद (पुरूष तथा महिला शिक्षक) हो सकता है। सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों का वेतन, निजी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की अपेक्ष अधिक होता है। इसका सर्वाधिक प्रभाव जीवन संतुष्टि पर पड़ता है। इसके अतिरिक्त सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को निजी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की अपेक्षा अधिक अवकाश मिलते हैं तथा कार्य का भार भी अपेक्षाकृत कम होता है। ये समस्त पक्ष जीवन संतुष्टि पर प्रभाव डालते हैं।

शैक्षिक निहितार्थ– प्रस्तुत अध्ययन तथा उससे प्राप्त परिणाम प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से जनता, शिक्षकों छात्रों तथा संस्थान के लिए उपयोगी हो सकते हैं। क्योंकि इसके द्वारा शिक्षकों की जीवन संतुष्टि के साथ–साथ उनकी अपेक्षाओं का भी पता लगाया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ

- Asthana, V and Asthana, Shweta (2005), 'Measurement and Evaluation in psychology and education, Agra: Vinod Pustak Mandir.
- Best, J.W. and Kahn, J.V. (2004),'Research in Education', New Delhi: Percentile Hall of India Pvt. Ltd.
- Garrett H.E. (1985), ' Statistics in psychology and education Bombay: Vakels, Feffer and Simons Ltd.
- Saxena, N.R. Mishra, B.K. and Mohanty, R.K. (2004), ' Teacher Education, Meerut: Surya Publication.
- Shah. Beena (1997), 'Abstracts of educational Researches, areilly: IASE, Rohilkhand University.